



सन्त अपने पास बुलाता है
तभी तुम्हारा अहं तुम्हें रोक
देता है और तुम फिर उसी
संसार में चले जाते हो जहाँ
से आये हो।

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्ध मार्ग ई-पत्रिका का बीसवाँ अंक प्रस्तुत है। इस अंक में महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व मगोद में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत है।

श्रीगुरुदेव का प्रवचन

हम सब चाहते हैं कि हम मुक्त हो जाएँ किन्तु हम सिर्फ चाहते हैं या कल्पना रखते हैं कि मैं मुक्त हो जाऊँ। अगर वास्तव में मुक्ति तुम्हारे सामने खड़ी हो जाये तो तुम कहोगे कि थोड़ा रुक जाओ कुछ काम कर लूँ फिर मुक्त हो जाऊँगा। जैसे हम सत्संग जाते हैं, सुनते हैं भाग लेते हैं और अगर कोई सन्त हमसे ये कह दे कि मेरे पास आ जाओ और रहो मेरे पास किन्तु अहं बीच में आ जाता है और हम फिर कुछ सुनते नहीं हैं। वैसे अगर देखा जाये तो सन्त के पास आनन्द के अलावा कुछ होता नहीं है और वही आनन्द देने के लिए जब तुम्हें सन्त अपने पास बुलाता है तभी तुम्हारा अहं तुम्हें रोक देता है और

जब हम अपने
अहंभाव को दूर
करके आश्रम में
रहते हैं तब कहीं
जाकर हमारी
आध्यात्मिक शक्ति
और साधना को
बल मिलता है ।

तुम फिर उसी संसार में चले जाते हो जहाँ से आये हो । हर जगह एक प्रवाह होता है, उसी प्रवाह में हम सब रहते हैं । ऐसे ही आश्रम में, एक सन्त, एक गुरु का प्रवाह होता है अगर हम उस प्रवाह को खुद के अनुकूल बना लेते हैं, जब हम अपने अहंभाव को दूर करके आश्रम में रहते हैं तब कहीं जाकर हमारी आध्यात्मिक शक्ति और साधना को बल मिलता है । फिर हमारी उस मार्ग पर गति होने लगती है, मुक्ति की ओर बढ़ने लगते हैं । अपने यहाँ तीन प्रकार के ताप बताये गये हैं- आधिभौतिक, अधिदैविक, आध्यात्मिक । जो नहीं खाना हैं, खाते हैं अर्थात् जो अभक्ष्य है उसका भी हम भक्षण कर लेते हैं फिर तो भुगतना ही पड़ेगा तापत्रय । किसी ने स्वामी चिन्मयानन्दजी से पूछा, वह व्यक्ति विदेश का था वहाँ के लोगों को च्विंगम खाने की आदत है, तो उस व्यक्ति ने कहा कि

आपने संसार क्यों त्यागा ? तो उससे स्वामी जी ने पूछा कि तुम च्विंगम कब थूकोगे? उसने कहा कि जब इसका स्वाद निकल जायेगा । इस पर स्वामी जी ने कहा मुझे भी संसार के साथ यही हुआ । उसका सार और स्वाद खत्म हो गया तो मैंने भी संसार को छोड़ दिया । हमें भय है तो अपने आप से और बहिरंग से देखा जाये तो सबसे बड़ा भय अपने आप से होता है । कहते हैं कि सबसे बड़ी समस्या है हमारे अन्दर चलने वाले अन्तर्द्वन्द्व की जो हमें सज्जन बनने के लिए एक बाधा करती है । मुझे अपने आप में निश्चय करना पड़ेगा कि मुझे अपने आप को सज्जन बनाना है । उसके लिए मुझे अपने अहं को त्यागना पड़ेगा । हम अपने मानसिक मोह को त्याग नहीं सकते क्योंकि उससे हमको लगता है कि हमारे अपने हमसे छूट जाएंगे । हमें ज्ञान बहुत है बाह्य-जगत

हम कहते तो हैं कि मैं बहुत समझदार हूँ, बहुत ज्ञानी हूँ किन्तु दूसरी तरफ हमारा घमण्ड हमको संकुचित करे हुए रहता है और हमको उस विशालता, सज्जनता की ओर बढ़ने नहीं देता है ।

का किन्तु आन्तरिक ज्ञान जिसकी परम आवश्यकता है उसकी खोज हम करते नहीं, विवेक, विनम्रता को अपनाते नहीं तो कहाँ से आएगी सज्जनता ? हम सबका एक स्तर होता है किन्तु हम सोचते हैं कि पहले वो विनम्रता से, सज्जनता से बात करे तब मैं उससे सज्जनता या विनम्रता से बात करूँगा । ये ही हमारा अहं हमको सज्जन बनने में बाधा उत्पन्न करता है । मेरे अनुसार सज्जनता और विनम्रता बचपन से या छोटेपन से ही होनी चाहिए बजाय कि आप किसी पद पर आने के बाद सज्जन बनें । जब कोई अहंकारी व्यक्ति सज्जन व्यक्ति के साथ द्वन्द्व करने लग जाता है तो सज्जन व्यक्ति विचार करता है कि मैं इसे किस प्रकार से समझाऊँ जिससे ये शान्त हो जाए और अपने गन्तव्य को जाए । हम कहते तो हैं कि मैं बहुत समझदार हूँ, बहुत ज्ञानी हूँ किन्तु दूसरी तरफ हमारा घमण्ड हमको

संकुचित करे हुए रहता है और हमको उस विशालता, सज्जनता की ओर बढ़ने नहीं देता है । एक कवि कहते हैं- ज्ञान बढ़े गुणवान की संगति, ध्यान बढ़े तपसी संग कीन्है, मोह बढ़े परिवारी की संगति, लोभ बढ़े धन की चित्त कीन्है, क्रोध बढ़े नरमूढ़ की संगति - अर्थात् जब हम किसी गुणवान या महापुरुष की संगति करते हैं तो ज्ञान बढ़ता है, उनके कृत्य का परिशीलन करके अपनी विशालता को बढ़ाने का प्रयास करते हैं । फिर हम जो भी कर्म करते हैं उसमें सोचते हैं कि यदि हमारी जगह कोई महापुरुष या सन्त होते तो इस कार्य को किस प्रकार करते? ये एक बहुत बड़ी सोच है और ये तब होता है जब हम किसी को अपना आदर्श मानकर उसके क्रियाकलापों पर ध्यान देते हैं । ये बहुत बड़ी उपलब्धि है और फिर जब हम किसी तपस्वी की संगत करते हैं तब हमारा मन

बाबा जी कहते थे कि मस्त रहो अपनी धुन में रहो

अन्तर्मुखी हो जाता है। मन धन की तरफ भागता है हम जो अपरिग्रह श्रवण करते हैं न उसका साधारण अर्थ लगाते हैं कि छोड़ देना, त्याग देना लेकिन जब हम किसी के ऐश्वर्य को देखते हैं तो मन उसकी ओर आकर्षित हो जाता है कि ये वस्तु मुझे कैसे प्राप्त हो ? उसी समय सज्जन विचार करता है ये उसकी वस्तु है भगवान उसे और दे उस पर आशीर्वाद बनाए रखे, हमारे प्रारब्ध में होगी तो हमें मिल जाएगी। कवि ने क्रोध की बात भी कही है कि क्रोध सबको आता है उसमें हमारा विवेक, हमारी बुद्धि काम नहीं करती तब कोई सज्जन होगा तो वो कहेगा शान्त हो जाओ लेकिन कोई मूढ़ व्यक्ति होगा वह कहेगा मार दे इसने तुझे मारा तू भी इसे मार। एक कहानी - एक बार एक हाथी अपनी सांस के द्वारा सड़क को साफ करते हुए जा रहा है उसी सांस से उसने एक चूहे को उड़ा

दिया। तभी चूहे को क्रोध आ गया उसने सोचा इसे तो सबक सिखा करके ही मानूँगा। वो जाकर सारे चूहों को इकट्ठा करता है। सबके सब एक पेड़ पर चढ़ जाते हैं कि जब हाथी आएगा हम उस पर कूद जायेंगे। अनायास ऐसा होता है कि जिस चूहे को हाथी ने उड़ाया था वही चूहा उसके ऊपर गिरता है बाकि सब नीचे गिर जाते हैं। नीचे से सारे चूहे उसको कहते हैं कि दबा दे दबा दे तू ही ऊपर है हम सब तो नीचे हैं, यहीं आप सोचो कि क्या वह चूहा उस हाथी को दबा पाएगा ? यही समस्या हमारे जीवन में आती है कि हम सब सोचते हैं मैं उसको दबा दूँगा या मैं उसको दबा दूँगी। सबके सब हम अपने घमण्ड में मर जाते हैं और साथ में इस संसार से कुछ नहीं ले जा पाते। बाबा जी कहते थे कि हाथी बनों, मस्त रहो अपनी धुन में रहो। कौन क्या कह रहा है इसमें रहो ही मत,

हम सब में
सज्जनता के गुण हैं
बस देर है तो अपने
आपको जानने की,
समझने की और
वो तब सम्भव
है जब हम किसी
सज्जन के साथ
उठने -बैठने
लगते हैं ।

स्वभाव ऐसा बनाओ कि बोलने वाला बोलते रहे हमें बस सद्विचार पर ही ध्यान देना है और अपने आपको सज्जनता की ओर प्रेरित करना है । अपने लक्ष्य को निश्चित कर लो और उसी में तटस्थ रहो, विचलित होने की कोई आवश्यकता नहीं है । कम से कम उस लक्ष्य के परिणाम तक पहुँचो, उससे तुम्हारे आत्मविश्वास को मजबूती मिलेगी, एक नई स्फूर्ति का स्पन्दन होगा कि मैं सब कुछ कर सकता हूँ, मेरे लिए कुछ भी असम्भव नहीं है । जब हम किसी सुसज्जन की संगति में आ जाते हैं तब हमारा उत्थान होने लगता है । फिर हम सोचते हैं अरे मैं इतने दिनों से कहाँ भटक रहा था, मुझे तो यहाँ पहले ही आ जाना चाहिए था । हम सब में सज्जनता के गुण हैं बस देर है तो अपने आपको जानने की, समझने की और वो तब सम्भव है जब हम किसी सज्जन के साथ उठने

-बैठने लगते हैं । तब हम आभास करते हैं कि ये गुण तो मेरे अन्दर भी हैं, मैं भी ऐसा कर सकता हूँ । सज्जन बनों और सज्जनता को दर्शाओ । दर्शाओ का तात्पर्य यहाँ आडम्बर से नहीं है कि तुम व्यर्थ में ही सज्जनता दिखा रहे हो, बाद में कहते हो इसे तो मैं बाद में देख लूँगा । सच्चाई को अपनाओ और उसे स्वीकर करो । यही सज्जनता है और यही तुम्हारा वास्तविक गुण होगा । सज्जनता का वास्तविक गुण होता है कि वह अपने कर्मको अपनाता है और सत्य की ओर प्रवृत्त होता है । सन्त के पास रहते हुए हम यही तो सीखते हैं कैसे अपने आप को सांसारिक दुःखों से दूर करें ? सन्त हमें उपदेश करता है सत्संग के माध्यम से अपनी क्रियायों के माध्यम से । उससे ही हमें पता चलता है कि संसार में क्या लेने लायक है और क्या नहीं अर्थात् किसके साथ मोह नहीं रखना है, विशालता

ज्ञानेश्वरमहाराज कहते हैं कि गुरु जो हमें मन्त्र प्रदान करता है, उस मन्त्र से हमारे अन्दर एक दीपक जल जाता है, जिससे अज्ञान सदा के लिए नष्ट हो जाता है ।

का पाठ भी हम यहीं से सीखते हैं । गुरु के प्रति एक उनके सामर्थ्य का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जैसे पारस पत्थर लोहे से लगाने पर लोहा सोना बन जाता है किन्तु गुरु में इतना सामर्थ्य होता है कि वह अपने शिष्य को अपने तुल्य अर्थात् अपने जैसा बना देता है । ज्ञानेश्वरमहाराज कहते हैं कि गुरु जो हमें मन्त्र प्रदान करता है, उस मन्त्र से हमारे अन्दर एक दीपक जल जाता है, जिससे अज्ञान सदा के लिए नष्ट हो जाता है । सद्गुरु के द्वारा दिया गया मन्त्र हमें पुनः जीवित करता है हम सिर्फ सोचते हैं हम जी रहे हैं किन्तु वास्तव में जब एक बार कृपा प्राप्त करते हैं तब अनुभव करते हैं कि हम जीवन जी रहे हैं अर्थात् गुरुमन्त्र एक ऐसा चिराग है कि जिसको जितना घिसोगे उतनी ही तुम्हारी ऊर्ध्वगति होगी अर्थात् आध्यात्मिक मार्ग में उतने ही तटस्थ होते जाओगे । किन्तु हमारा गुरु

के प्रति समर्पण, श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए तब कहीं जाकर हम गुरु की कही हुई बातों पर अमल कर पाएंगे और अमल करेंगे तभी हम अपने मूल उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे । हमें अपने मूल उद्देश्य को नहीं भूलना चाहिए बल्कि उसके प्रति अपनी जिज्ञासा को बनाए रखना चाहिए । वह मूल उद्देश्य है आत्मज्ञान और जब जिज्ञासा होगी इसके प्रति तब हम उससे सम्बन्धित विकल्पों को चुन पाएंगे । वरना हम इस मोहमय संसार में फँसकर रह जाएंगे और अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे । बाबा जी कहते हैं कि मन्त्र एक ध्वनि है वह ध्वनि सर्वत्र है । वो कहते हैं ओंकारश्च अथ शब्दश्च । उपनिषद् में आता है कि ये एक दिव्य ध्वनि जिससे ये सृष्टि बनी है, वह है ओम् । एकाग्र होकर हम जब शंख को सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि उसके अन्दर से समुद्र की आवाज आ रही है । अर्थात्

ज्ञानेश्वर महाराज
कहते हैं मैं
समझता हूँ इस
संसार में होने
वाली सभी
हलचलों को
परन्तु गुरु जब
हमको जगा देता
है तो हमारे अन्दर
परिवर्तन हो
जाता है ।

सागर की लहरों की ध्वनि उस छोटे से शंख में सुनाई देती है । हमारे सन्त कहते हैं कि ये जो ओंकार है इसके दिव्य स्पन्दन से ही ये पूरे संसार की उत्पत्ति बनी है अर्थात् इस संसार का मुख्य कारण ओम् है, ऐसी बात समझ में आती है । ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं मैं समझता हूँ इस संसार में होने वाली सभी हलचलों को परन्तु गुरु जब हमको जगा देता है तो हमारे अन्दर परिवर्तन हो जाता है कि जो हम पहले जिस वस्तु को जिस नजरिये से देखते थे और जिस विषय में अरुचि रखते थे उसमे हमारी रुचि बदल जाती है दृष्टि बदल जाती है । बाबा जी कहते थे कि भगवद नाम जप करना कोई छोटी बात नहीं है अर्थात् बहुत बड़ा कार्य है । वो कहते हैं कि गुरु ने हमें साधन दिया जिससे हम शान्ति का अनुभव कर सकें । जो मन्त्र है वह हमारे अन्दर उठने वाले

नकारात्मक विचारों से दूर ले जाता है और हमें शान्ति का अनुभव कराता है । विचार कीजिए २४ घण्टा मेरा मन शान्त हो जाए तो फिर हम दुनिया के प्रपंचों से छुटकारा पा सकते हैं । सर्वप्रथम शान्ति अपने आप में पाओ, दया प्राप्त करनी हैं तो पहले अपने आप में प्राप्त करो क्योंकि जब अपने में उस को महसूस करोगे तब वह सर्वत्र अर्थात् संसार में व्यापक हो जाएगी, सबमें सम दृष्टी आएगी । मैं ये द्वैत मिट जाता है और अद्वैत की भावना प्रधान रूप से अपनी जगह बना लेती है । बाबा जी कहते थे गुरु सिर्फ मन्त्र ही नहीं देता है बल्कि बहुत कुछ देता है । भगवान ने हमें जिन्दगी जीने के लिए बुद्धि दी है अर्थात् अपनी जिन्दगी को स्वकर्तव्य पूर्ण जीते हुए मूल उद्देश्य को प्राप्त करें ।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय